एक कुंआ है, इस कुंएं को चमत्कारी माना जाता है । इसके जल के बारे में आचार्य जिनप्रभव का कथन है कि इसके जल से दीपावली को दीपक जलाए जाते थे । यह स्थान पावा से १ कि.मी. की दूरी पर जंगल में है । कुंआ और स्तूप सुरक्षित हैं । यहां गुजराती समाज ने भव्य समोसरण मंदिर का निर्माण किया है । इस मन्दिर की गणना भारत के संगमरमर के प्रसिद्ध मन्दिरों में की जाती है । इस मन्दिर के तोरण व संरचना जैन वास्तु विधि के आधार पर की गई है । श्वेताम्बर मन्दिर में धर्मशाला है । जहां खाने की बहुत अच्छी व्यवस्था है । जलमंदिर के दूसरी ओर दिगम्बर जैन मंदिर व धर्मशाला है । पावापुरी वैसे गांव है, यहां के लोग खेतीबाड़ी से अपना गुजारा करते हैं । गांव में दुकानें नामात्र ही हैं । यात्रियों की व्यवस्था मन्दिर के जिम्मे है ।

जिस समय हम पावापुरी पहुंचे, बिजली गुल थी । अंधेरे में हम जलमंदिर में गये । हमारा सौभाग्य था कि आरती का समय था । कोई यात्री और नहीं था । हमें सर्वप्रथम जलमंदिर में आरती करने का सौभाग्य मिला । फिर श्वेताम्बर मंदिर में आरती के लिये पुजारी को मिले । विधि अनुसार पुजारी ने आरती करवाई । रात्रि में ही हम वापस श्वेताम्बर मंदिर में लौटे । हमें यहां कमरा मिल गया । यहां रात्रि को हम दोनों ठहरे । मंदिर की भव्यता देखने को बनती है । यहां भोजन किया, कर्मचारियों ने पूरा सहयोग किया । रात्रि को मेरे धर्मभ्राता को थोड़ा सा बुखार आया, जो औषधि से ठीक कर लिया गया । सबकुछ प्रभु महावीर की लीला थी, फिर कभी मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन को तकलीफ नहीं हुई । इसका कारण पावापुरी में मच्छरों का आतंक था । सुबह हुई, मन्दिर में पूजा की, मंदिर को दिल खोलकर देखा, जीर्णोद्धार का कार्य कई वर्षों से चल रहा था,

प्राचीन शिलालेख लगाये गये थे । जो इसी मन्दिर में जीर्णोद्धार की सूचना देते थे । अब यहां जैसलमेर के पीले पत्थर की तीर्थंकरों की प्रतिमा परिक्रमा लग रही थी । यह सारा देखने के पश्चात हम जलमंदिर की ओर बढ़े । लाल कमल खिले हुए थे । धरती पर देवविमान जैसा यह मन्दिर था । फिर सामने महताव वीवी का मन्दिर देखा । इसके साथ प्राचीन मन्दिरों का समूह था, फिर हम तांगे द्वारा नया समोसरण मन्दिर देखने गये, उस कुंऐ को देखा, जिसका वर्णन मैं पहले कर चुका हूं । प्राचीन स्तूप देखा जो इस स्थान की प्राचीनता का प्रतीक है । रही समोसरण की बात, यह तो अंगूठी का नगीना है । समोसरण से समझाना हो तो इस मंदिर को जरूर देखना चाहिये, इस मंदिर के साथ धर्मशाला भी है ।

यहीं दिगम्बर मन्दिर देखा, जहां प्राचीन प्रतिमाओं का अच्छा संग्रह है । यहां आचार्य रयण सागर के दर्शन किये, उन्हें पंजाबी साहित्य भेंट किया, उन्होंने अपना साहित्य भेंट किया । यह भेंट बहुत अच्छी रही । एक दिगम्बर संत ने हमारे जैन साहित्य की दिल खोलकर प्रशंसा की ।

पावापुरी के नजारे देखते दोपहर हो चुकी थी, चारों तरफ वातावरण था। दिगम्बर जैन मुनि के संघ दर्शन किए। उनका मधुर स्वभाव मन को मोहने वाला था। उन्होंने हमें यहां मन्दिर में विराजित जैन मूर्तियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। यह मुनि महाराज अच्छे लेखक थे। उन्होंने अपने हस्ताक्षर युक्त अपना एक सुन्दर ग्रंथ प्रदान किया। यह ग्रन्थ पावापुरी की अनुपम भेंट थी। यहां की धर्मशाला में हमने मन्दिर के चित्र प्राप्त किए जो भारत सरकार के पर्यटन विभाग से प्रकाशित हुए थे। यह चित्र जलमन्दिर व नए समोसरण मन्दिर के थे। हमने धर्मशाला से दोपहर को

भोजन किया और फिर तीर्थ पावापुरी को वन्दना कर नवादा की ओर बढ़ने लगे।

नवादा :

नवादा जिला है जो पावापुरी से २५ कि.मी. की दूरी पर है । नवादा से मात्र २ कि.मी. दूरी पर गुणाया तीर्थ है, यहां गुणशील चैत्य है । यह कभी राजगृह का भाग रहा था । गुणाया, गुणशील का अपभ्रंश है । इसी क्षेत्र में अनेकों वार श्रमण भगवान महावीर पधारे थे । यह स्थान गणधर गौतम स्वामी की केवलज्ञान भूमि के रूप में पुज्य है । यही स्थान है जहां गणधर गौतम प्रभु महावीर की आज्ञा से देवशर्मा ब्राह्मण को प्रतिवोधित करने आये थे । भगवान महावीर के निर्वाण का समाचार सुन गणधर गौतम वच्चों की तरह रोने लगे । फिर अचानक की संसार की सच्चाई का ज्ञान होते ही केवलज्ञानी वन गये । यहां एक भव्य तालाव है, जिसके मध्य में एक दिगम्वर जैन मन्दिर है । इस जल मंदिर का निर्माण पावापुरी जल मंदिर की तरह है, इसके सामने एक तोरण है, जिसकी कला दर्शनीय है ।

यहां एक श्वेताम्वर मन्दिर भी है । यह स्थान नवादा स्टेशन से २ कि.मी. दूरी पर है । वहां से २०० मी. पर जलसरोवर है । यहां का वातावरण शांत है । यह मंदिर प्राचीन शैली का तालाव है । यह तालाव का जल खुशक हो चुका है । यहां यात्रियों के ठहरने के लिये श्वेतांम्वर व दिगम्वर धर्मशालाएं हैं, जहां भोजनशाला, ठहरने की सुन्दर व्यवस्था है ।

इस मन्दिर के दर्शन किये, वहुत हरा-भरा वातावरण है । यहां नवादा का वस स्टैंड सभी तीर्थों को जाने का केन्द्र विन्दू है । यहां से लछवाड़ जाया जा सकता है । यहां से ही

समेदशिखर के लिये सीधी वसें मिलती हैं । हमारा अगला गणतव्य स्थान श्री समेदशिखर तीर्थ था । समेदशिखर को वढ़ने के लिये हम वस स्टैंड पहुंचे थे । वहां से बस का इंतजार करने लगे । हमें कुछ समय के वाद शिखर जी के लिये वस मिल गई । यहां से दो रास्ते समेदशिखर के लिये जाते हैं । एक कुडरमा-झुमरीतलैया की, जहां वहुत सी अभ्रक खानें कई किलोमीटर तक फैली है, इसका कंट्रोल फौज़ के जिम्मे है । दूसरा रास्ता जम्मूई वाला है । यह रास्ता पहाड़ी है । रास्ता हरियावल व नदियों से भरा पड़ा है, जंगली जीवों से यह जंगल भरे पड़े हैं । जम्मूई ही प्रचीन गांव है, यह वस का रास्ता हमने इसी मार्ग से तय किया । यह सफर हमारे जीवन का महत्वपूर्ण सफर था । जैनधर्म में दो तीर्थ वहुत महान माने जाते हैं । पहला तीर्थ समेदशिखर है, दूसरा तीर्थ गुजरात का शत्रुंजय (पालिताना) तीर्थ महान माना जाता है । हर जैन सुवह उटकर जब मन्दिर में आता है तो प्रार्थना में यह दोहा वोलता है :-

"समेदशिखर तीर्थ वड़ो, जहां वीसे जिन राव"

या कहा जाता है

"एक वार जो वन्दन कर ले, नरक पशु गति न पावे"

समेदशिखर महिमा :

समेदशिखर जैनधर्म की शान है । जैनधर्म के २४ तीर्थंकरों में से २० तीर्थंकरों का निर्वाण स्थल समेद शिखर हैं । सभी तीर्थंकर अनन्त काल से इस पहाड़ पर पधारते रहे हैं, तपस्या की है । रेलवे स्टेशन का नाम पारसनाथ है । समेतशिखर का दूसरा नाम पार्श्वनाथ हिल्ज है । यहां आदिवासी रहते हैं । यहां प्राचीन जैन सराक जाति रहती है, जो भगवान पार्श्वनाथ को अपना कुलदेवता मानते हैं ।

स्टेशन पर श्वेताम्बर व दिगम्बर जैन धर्मशालाएं हैं । दोनों परम्परा के विशाल व सुन्दर मन्दिर हैं जो श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों परमपरा से संबंधित हैं ।

यहां से २२ कि.मी. दूर मधुवन है, जो शिखरजी पहाड़ की तलहटी है । मधुवन के आगे शिखर के पहाड़ शुरु होते हैं । यहां का कणकण पवित्र है, पूज्नीय है । इसी मधुवन में धर्मशालाएं, मन्दिर, गुरुकुल हैं । ऊपर पहाड़ ३१ मन्दिर हैं । मात्र एक मन्दिर में सांवलीया पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा है, बाकी मन्दिरों में विभिन्न तीर्थंकरों के चरण चिन्ह हैं । यह मन्दिर पहाड़ की चोटियों पर स्थित है । यह पहाड़ प्रकृति सौन्दर्यता, जंगली जड़ी-बूटियों से भरे पड़े हैं । इस पहाड़ के बारे में दिगम्बर मान्यता है कि जो व्यक्ति जीवन में एक बार इस तीर्थ की वन्दना करता है, उसको नरक, पशु योनि प्राप्त नहीं होती । दोनों परम्परा के श्रावक-श्राविका, साधु व साध्वी यहां यात्रा करते हैं । यह तीर्थ जैन का पूज्नीय है । यहां की यात्रा महान पुण्य का कारण है । मधुवन-मधुवन है, यह धरती देवताओं की भूमि है । यहां पर आने की कल्पना ही हृदय को रोमांचित करती है । मैं पहले इस तीर्थ के दर्शन कर चुका था । परन्तु पर्वत की यात्रा कारणवश नहीं कर सका । इस तीर्थ का वर्णन ज्ञाताधर्म कथांगसुत्र में मल्लिजिन के संदर्भ में आया है, वहां तीर्थंकर मल्लिनाथ के निर्वाण का वर्णन करते हुए दो शब्द आए हैं :- 'सम्मेय पल्लव और सम्मेव सेलसिहिर' कल्पसूत्र में प्रभु पर्श्वनाथ के जीवन चरित्र में समेतशिखर के लिये सम्मेह सेल सिहरमि शब्द आया है । मध्यकालीन साहित्य समिधिगिरि या समाधिगिरि नाम भी प्राप्त होता है । जनसाधारण इसे पारसनाथ हिल्ज से संबोधित करते हैं । श्वेताम्बर परम्परा में इसे समेदशिखर कहते हैं । दिगम्बर

परम्परा में इस पर्वत राज को समेतशिखर कहते हैं ।

इस तीर्थ के जीर्णोद्धार का लम्बा इतिहास है । नवीं सदी में आचार्य श्री यशोदेय सूरि जी के परम शिष्य श्री प्रद्युमनसूरि ने लम्बा समय यहां पर विहार किया था । अनेकों श्रीसंघ समेतशिखर पर यात्रा के लिये आए थे, फिर यह तीर्थ धर्माराधना का शिखर होना शुरु हो गया । इस सदी के अंत में इन मंदिरों का जीर्णोद्धार हुआ ।

सम्राट अकबर ने सन् १५६२ में आचार्य हीरा विजयसूरि से प्रभावित हो यह तीर्थ उन्हें भेंट में दे दिया । आगरा के श्री कुमारपाल सोनपाल लोहा ने सन् १६७० में यहां के जिनालय का जीर्णोद्धार किया ।

सन् १७५२ में दिल्ली के बादशाह अलीखान बहादुर से मुर्शिदाबाद के सेठ महतावराय को जगत सेठ की उपाधि से विभूषित किया । उन्हें मधुवन कोठी, जयपारनाला, जलहरि कुण्ड, पारसनाथ तलहटी पहाड़ उन्हें भेंट स्वरूप दे दिया । सं० १८०६ में इसी सेठ को बादशाह अहमदशाह ने उन्हें ३०१ बीघा जमीन भेंट में दी।

सं० १८१२ में बादशाह अब्बु अली खान ने पवित्र पहाड़ को कर मुक्त कर दिया । श्री महतावराय इस पहाड़ का जीर्णोद्धार करना चाहते थे, पर उन्हें मौत ने आ घेरा । उनके पुत्र सेठ खुशहालचंद ने इस कार्य को सम्पन्न किया । उन्होंने दैवी संकेतों से २० टुकों का निर्वाण किया । इन टोंकों की प्रतिष्ठित सन् १८२५ माघ शुक्ला तृतीय को आचार्य धर्मगिरि के कमलों से हुई । इसी जीर्णोद्धार के अंतरगत जलमंदिर, मधुवन में सात मन्दिरों, धर्मशाला, पहाड़ पर श्री भोमिया निर्माण हुआ ।

स० १६२५ से १६३३ तक इस तीर्थ का पुनः जीर्णोद्धार के अन्तर्गत ही भगवान आदिनाथ भगवान वासुपूज्य, नेमिनाथ,

महावीर तथा शाश्वत जिनश्री ऋषभानन्द, चंद्रानन, वारिषेण, वर्धमान आदि की नई टोकों का निर्माण हुआ ।

कालचक्र के प्रवाह से इस पर्वत पर एक और संकट आया । पालगंज के राजा ने पहाड़ बेचने की सार्वजनिक घोषणा की । सूचना पाकर कलकत्ता के रायबहादुर श्री बद्रीदास जौहरी एवं मुर्शिदाबाद के श्री बहादुर सिंह दुग्गड़, अतिरिक्त भारतीय श्वेताम्बर संस्था आनन्द जी कल्याण जी पेढी को यह पहाड़ खरीद करने का संकेत किया । दोनों महान आत्मा के सक्रिय सहयोग से इस पेढी ने यह पहाड़ ६.३.१६१८ को २४२२००० रुपये में क्रय किया, तबसे इस पहाड़ का प्रबंध से यह पेढ़ी करती है ।

साध्वी श्री सुषमाजी के अनथक प्रयासों से संवत २०१२ में इस तीर्थ का पुनः जीर्णोद्धार हुआ जो संवत २०१७ में पूर्ण हुआ । यह २३वां जीर्णोद्धार था । आज इस तीर्थ पर जो हम देख रहे हैं, सब इस जीर्णोद्धार का फल है, इसका विस्तार है ।

इस पावन तीर्थ की यात्रा संकटहारी, पुण्यकारी और जन्म जन्म के पाप विनाश करती है । लगभग ५ कि.मी. की चढाई पर गंधर्वशाला है । यहां यात्री विश्राम करते हैं, यहां भाताघर (नाश्ता) है । यात्रियों को नाश्ता मिलता है । यहां से २ कि.मी. दूरी पर ५०० सीढ़ियां चढ़ने के बाद समतल भूमि आती है । इसके आगे यात्रा शुरू होती है । यहां पार्श्वनाथ स्टेशन से समाज की बस मुफ्त चलती है । वैसे सब यात्री पैदल चलने में पुण्य मानते हैं । वैसे यहां डोली का इंतजाम दोनों धर्मशालाओं में है । यहां बीसपंथी, तेरापंथी कोठी धर्मशालाएं हैं । श्वेताम्बर कोठी धर्मशाला काफी प्राचीन है । इस तीर्थ का संचालन सेठ आनन्द जी कल्याण जी पेढी अहमदाबाद के जिम्मे है । पहाड़ की सारी सम्पत्ति

श्वेताम्बर समाज के नाम है । इस तीर्थ को यहां के महाराजा से पेढी ने खरीदा था । वैसे मुगल काल में अनेकों बादशाहों ने इस तीर्थ पर शिकार पर पाबन्दी लगाई थी, अब इस क्षेत्र में पूर्ण शिकार पर प्रतिबंध है ।

तीर्थदर्शन :

मधुवन में आठ श्वेताम्बर मन्दिर हैं, दादावाड़ियां हैं । एक भोमिया जी का मन्दिर सर्वमान्य है । उन्हें तीर्थरक्षक माना जाता है । दिगम्बर धर्मशाला में भी मन्दिरों का भी भव्य समूह है । यहां अनेकों चैवीसी के तीर्थंकर आए, यह उनकी याद दिलाती है । यहां १७ जिनालय हैं, एक पार्श्वनाथ कल्याण केन्द्र है, एक जैन म्युजियम है जो जैन मंदिर की संस्कृति का प्रहरी है । यहां मधुवन की रौनक देखते ही बनती है । समस्त विश्व के जैन यात्री यहां बिना भेदभाव से आते हैं, अपनी-अपनी विधि अनुसार पूजा अर्चना करते हैं । यह गुजराती जैन समाज का भव्य व कलात्मक मंदिर है ।

पहाड़ के ऊपर की यात्रा दिगम्बर भाई रात्रि के दो बजे आरम्भ करते हैं, श्वेताम्बर ४ बजे करते हैं । ऐसा यहां की पूजा व्यवस्था कोर्ट ने तय कर रखी है । यात्रीगण भक्ति भाव से पूजा करके जीवन सफल करते हैं । पहाड़ों की ऊंची उग्र सघन वनों से गुजरती है । अंतिम तीन कि.मी. की चढ़ाई कठिन है । ६ कि.मी. चढ़ाई है । ६ कि.मी. मंदिरों टोकों का परिसर है, ६ कि.मी. उतराई है । इस प्रकार पर्वत पर कुल २७ कि.मी. चढ़ाई उतराई है ।

पार्श्वनाथ स्टेशन पर हर ट्रेन रुकती है, यहां धर्मशाला में बसों के रुकने की सुन्दर व्यवस्था है । यहां का हर कण-कण पूज्नीय है । कम से कम एक हजार यात्री

धर्मशाला में ठहरते हैं । इस स्थान पर जैन परम्परा का पुर्ननिर्वाह किया जाता है । हर प्रदेश के यात्रियों का यह अच्छा मिलन स्थल है । यात्रा करने वले तीर्थ यात्रियों को सर्वप्रथम भोमियां जी की पूजा करनी होती है । फिर उनकी आज्ञा से पूजा शुरु होती है । यात्रा सम्पन्न होने पर भी भोमियां जी का प्रशाद चढ़ाना जरूरी है । यह तीर्थ की मान्यता है । पर्वत की चढ़ाई में व्यवस्था व सुरक्षा के लिये सिपाही साथ भेजे जाते हैं । यह यात्रियों की जंगली जानवरों से सुरक्षा करते हैं । सिपाही नीचे रुकते हैं । हर यात्री को अपनी धर्मशाला में यात्री की सूचना देना जरूरी है । ऊपर घना जंगल, चोटियां व प्रकृति के सुन्दर दृश्य विखरे पड़े हैं । कलकत्ता वालों के लिये तो यह हिल स्टेशन की तरह है, पर यहां यात्री के लिये निश्चय वनाया जाता है कि मांस, शराव या उससे वना पदार्थ पहाड़ पर न ले जावा जाये । सारी व्यवस्था श्वेताम्वर कोठी की गुजराती समाज के जिम्मे है ।

समेदशिखर दर्शन :

पर्वत के ऊपर चढ़ते सव से पहले सीतानाला आता है । यहां सिपाही रुक जाते हैं और वापसी तक इंतजार करते हैं । यहां से सीधी चढ़ाई शुरु हो जाती है । आगे गंधर्व नाला आता है, जिसका जल सुन्दर व स्वच्छ है । यहां पूजा की सामग्री शुद्ध की जाती है, फिर आती है पहली टोक जो गणधर गौतम स्वामी की है, यहां एक कमरे की धर्मशाला है, जहां मुनिराज ही ठहर सकते हैं । गृहस्थी को हर हालत में नीचे आना होता है ।

दूसरी टोक आठवें तीर्थकर श्री कुन्थुनाथ की है । तीसरी टोक शाश्वत तीर्थकर ऋषभानन की है चौथी टोक श्री

चंद्रानंन शाश्वत तीर्थंकर की है, पांचवीं २१वे तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान की है, छठी टोंक अठाहरवें तीर्थंकर अरहनाथ की है । सातवीं टोंक १९वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवान की है । आठवीं टोंक ११वें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ की है, ९वीं टोक तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ जी की है । दसवीं टोंक छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु जी की है । ११वीं टोंक २०वें तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामी की है । १२वीं टोंक तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की है । यह टोंक एक स्वतंत्र पहाड़ी पर है, सीधी चढ़ाई है । कई लोग इस टोक को भाव-वन्दन ही कर पाते हैं, यहां से चढ़ाई कठिन हो जाती है । यहां बन्दरों की भरमार है । १३वीं टोंक प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जी की है, १४वीं टोंक श्री अनंतनाथ भगवान की है, १५वीं टोंक श्री शीतलनाथ भगवान की है । १६वीं टोंक तीसरे तीर्थंकर भगवान सम्भव नाथ की है । १७वीं टोंक १२वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य की है, १८वीं टोंक चौथे तीर्थंकर श्री अभिनन्दन स्वामी की है । यहां से जलमंदिर की दूरी कम रह जाती है। यह स्थान तीनों तरफ से जलकुण्डों से घिरा हुआ है ।

१९वीं शिखर पर भगवान पार्श्वनाथ का जलमंदिर है, यहां धर्मशाला व पूजा के लिये अच्छी व्यवस्था है । यह यात्रा का मध्य है, यहां यात्री स्नान करके पूजा करते हैं । यहां कुछ आराम भी करते हैं । यहां से हम स्वयं को पर्वत की चोटियों से घिरा रहता है । २०वें शिखर पर गणधर गौत्तम स्वामी के चरण हैं, २१वें शिखर पर १५वें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ की टोकें हैं । २२वीं टोंक शाश्वत तीर्थंकर वारिषेन की है, २३वीं टोंक शाश्वत तीर्थंकर वर्धमान की है, २४वीं टोंक श्री सुमति नाथ की है, २५वीं टोंक १६वें तीर्थंकर श्री भगवान शांन्तिनाथ की है । २६वीं टोंक श्री महावीर स्वामी की टोंक है जो २४वें तीर्थंकर थे । २७वीं टोंक श्री

सुपार्श्वनाथ की है, २८वीं टोंक व २९वां शिखर द्वितीय तीर्थंकर भगवान अजीत नाथ का है, जहां उनकी टोंक स्थापित है । ३०वीं शिखर पर २२वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ मोक्ष गये थे ।

३१वीं टोंक २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की है, जो सबसे ऊंची टोंक है । यह प्रभु पार्श्वनाथ की समाधि भी है, यह टोंक दोमंजिल की है । यहां से खड़े होकर मधुवन का नजारा देखने योग्य है, पहाड़ से नीचे निहारते है तो सारे मंदिरों की निर्माण शैली व कला अत्यन्त मनोरम लगती है, सारे मन्दिरके कलश ऐसे लगते है, जैसे धरती पर देवविमान उतर आये हों, यहां यात्रा सम्पूर्ण होती है । यहां एक डाक-बंगला है । मधुवन के ऊपर समेदशिखर पहाड़ मुकुट के आकार का प्रतीत होता है । पहाड़ी परिवेश, सघन वन, नैसर्गिक सौन्दर्य आत्मा को शांति प्रदान करता है ।

मधुवन पर बहुत से मुनियों समाधि मरण ग्रहण कर पंडित मरण प्राप्त किया है, यहां पर अनेकों मुनियों, श्रावकों की समाधियां भी हैं । यहां मधुवन में निर्माण कार्य चलता रहता है । कभी पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार हो रहा है, कहीं नये मन्दिर व धर्मशालाएं बन रही है, अनेकों आचार्य, साधु, साध्वी भारत के कोने-कोने से इस तीर्थ की यात्रा के लिये आते हैं । यहां एक दर्जन से अधिक धर्मशालाएं हैं । यहां १५०० यात्री आराम से ठहर सकते हैं । यहां होली के पर्व पर मेला लगता है, जिस पर यात्री व यहां के लोग उत्साह से भाग लेते हैं ।

इन धर्मशाला में पर्याप्त मात्रा में प्रचार सामग्री प्राप्त होती है, इसमें साहित्य, प्रतिमा, माला व ऑडियो कैसेट पर्याप्त मात्रा में मिलती है, यहां अच्छा बाजार, बैंक की सुविधा है, यहां स्थानक वासी मुनि श्री नवीन चंद्र जी म० ने

श्री पार्श्वनाथ कल्याण केन्द्र की स्थापना की है । इस मन्दिर की ऊपरी मंजिल पर महाप्रभावक आचार्य श्री शांति विजय जी म० की प्रतिमा है । जिसके कारण बहुत सारे यात्री इस स्थान पर ठहरना पसन्द करते हैं ।

हमारी शिखर जी की यात्रा

नवादा से दोपहर को हम बस द्वारा चलकर गिरडिह पहुंचे । यहां से एक छोटा सा रास्ता मधुवन को जाता है, इस रास्ते का हमे ज्ञान नहीं था, परन्तु बस में बैठे कुछ यात्रियों ने हमारा मार्ग दर्शन किया । उन्होंने बताया कि आप लोगों को कोण्डरमा पार्श्वनाथ जाने की आवश्यकता नहीं, जब तक आप कोण्डरमा पहुंचोगे तब तक आप मधुवन पहुंच जाओगे। अगर आप टैक्सी से जाओ तो आप यह रास्ता शीघ्र तय कर लोगे । हम गिरडिह उतरे, बस स्टैंड से टैक्सी ली, उस समय शाम पड़ चुकी थी, रात्रि का समय आ गया था । टैक्सी के माध्यम से आधे घण्टे में पवित्र मधुवन के दर्शन कर रहे थे । मधुवन पहुंचते ही हमारी सारी थकावट दूर हो गई । हम श्री श्वेताम्बर जैन कोठी मधुवन पहुंचे, वहां धर्मशाला का विशाल परिसर है । धर्मशाला में मन्दिर का भव्य परिसर है, इसमें अनेकों नवीन व प्राचीन मन्दिर थे । इस धर्मशाला के बाहर भोमिया जी तीर्थ रक्षक की भव्य प्रतिमा थी । अन्दर के मन्दिर तीर्थंकरों की प्रतिमाओं से भरे पड़े थे । यह ऋषभदेव, वासुपूज्य, नेमिनाथ व महावीर को छोड़ सभी तीर्थंकरों का निर्वाण हुआ था । वैसे सभी तीर्थंकर यहां पधारे थे ।

दिगम्बर मन्दिर में अधिकांश प्रतिमाएं भगवान पार्श्वनाथ की थीं । इसी तरह यहां समोसरण मन्दिरका भव्य परिसर था, जिसमें विशाल समोसरण था । बाहर ३ चौवीसी, उनसे

सम्बन्धित शासनदेव, देवीयों की प्रतिमाएं थीं । यह मंदिर शिखर जी के नीचे सबसे करीब है ।

एक भव्य मंदिर गुजराती समाज का था, जिसकी अपनी धर्मशाला थी । यहां विशेष रूप से गुजराती ठहरते हैं, यहां गुजराती खाना आराम से मिलता है, रात्रि को पहुंचने का फायदा यह रहा कि हमने सभी मंदिर की आरती में कुछ समय के लिये भाग लिया । फिर हम खाना खाने के लिये बाजार में आये, यहां थकान के कारण कम भोजन ही लिया, पर मैं एक एक बात उल्लेख करना चाहता हूं कि मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन के पांवों में एक पत्थर चुभने के कारण चोट लगी । इतना घाव होते ही उसने मेरे साथ यात्रा में मेरा साथ दिया । यह सब उसका मेरे प्रति समर्पण भाव का चिन्ह है ।

भोजन करने के बाद हमने सुबह का कार्यक्रम तय करना था । हमने धर्मशाला के मुनीम से यात्रा के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कल यहां वर्षा हुई थी, कल को कोई यात्रा वहां नहीं जा सकेंगे । पहाड़ की फिसलन है । मैंने कहा 'मौसम जैसे भी हों, हमें कल यात्रा करवायें । मुनीम जी ने कहा, "ऐसी बात है तो दादा भौमिया के यहां प्रार्थना में शामिल हो जाओ, सुबह चार बजे आपको उठायेंगे। यहां यात्रा में उपवास किया जाता है, अगर आप नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं, कोई नकदी हो तो जमा करवाकर रसीद ले लो, बाकी पूजन सामग्री भेंट ले लो, सुबह तो आपको यात्रा करनी ही है ।"

मैंने मुनीम जी की सारी बातों की ओर ध्यान दिया । उन्होंने हमें यह भी पूछा कि आपको डोली चाहिये तो बजन करवा लो, सुबह डोली वाला सुविधा से यात्रा करवा देंगे । मैंने कहा, "हम प्रभु दर्शन पैदल करेंगे, उन्होंने हमारा नाम

लिख लिया। मैंने एक नौकर लिया, उसको एक टार्च संभाली । हमारा कुछ सामान था जो पूजा के काम के लिए था । फिर भोमिया जी महाराज के चरणों में विधि सहित प्रसाद अर्पण किया । भोमिआ के भक्त यहां मनुष्य ही नहीं पशु भी हैं । वहां यात्रियों के साथ कुत्ते स्वयं जाते हैं । यात्रियों को रास्ता भटकने नहीं देते । इसलिये कुत्तों की खूब सेवा होती है । उन्हें भोजन व दूध प्रदान किया जाता है । यह बात इस तीर्थ की विशेषता है कि यात्रा की तैयारी भौमिया जी के भजन कीर्तन से शुरु होती है । यहां हर समय अतिशय घटित होते रहते हैं ।

हम रात्रि को सोने के लिये अपने कमरे में पहुंचे । यह विशाल कमरा था । हमें शाम के खाने की पर्ची दी गई क्योंकि यात्री अकसर ४ बजे शाम वापस आ जाते हैं। शाम को उतरते समय लड्डू व नमकीन दिया जाता है । वहां एक चाय की दुकान खुली थी । सुबह चार बजे से पहले हम उठे, भोमिया जी को वन्दना कर हम चले । हाथ में पहली बार लाठी पकड़ी । लाठी का पहले तो हमें कोई लाभ महसूस नहीं हुआ पर आगे जब उतराई आई, तब छड़ी का महत्व पता चलता गया ।

हम सुबह ही दो लड़कों से मिले, जो आदिवासी थे । वह पेढी के सिपाही थे, दोनों तीरअंदाज तीर के पक्के निशानची थे । जंगली जानवरों से यात्रियों की रक्षा करने के लिये इस तरह की व्यवस्था श्री आनन्द जी कल्याण जी पेढी ने कर रखी है । यहां सब लोग प्रभु पार्श्वनाथ जी की जय-जयकार करते पर्वत पर चढ़ते हैं । बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष नवयुवक सभी एक भावना से चलते हैं । मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन को चाय की तलब थी । सो हम दोनों ने एक होटल में चाय पी, क्योंकि पहाड़ की चढ़ाई थकाने वाली

होती है । हम पर्वत राज की ओर बढ़ने लगे । कुछ ही किलोमीटर चलने पर सीतानाला आया । यहां एक बार पुनः चाय पी, क्योंकि सुबह के नाशते का कोई स्थान इस तीर्थ स्थान पर नहीं, वैसे भी ऊपर शुद्धि का काफी ध्यान रखा जाता है । यह स्थान प्रदूषण मुक्त स्थान है ।

अपने सहधर्मीयों के साथ तीर्थंकर परमात्मा के गुणगान गा रहे थे, हम आगे बढ़ रहे थे, रास्ते में एक डोली वाला मिला । इस डोली को चार आदमी उठाते हैं । एक बांस की वहंगी में एक हल्का आसन लगाया जाता है जिसे रखने और उठाते समय डोली वाले पार्श्वनाथ की जय बोलते हैं । सारा पर्वत जयकारों से गूंज रहा था । हम एक ऐसे संसार में पहुंच चुके थे, जहां हमें एक ही स्थान नजर आता था, वह था समेत शिखर । यात्रा कठिन जरूर है, पर इस यात्रा में यात्री कभी थकते नहीं । जीवन में परम सौभाग्य से ऐसे तीर्थ के दर्शन हो रहे थे, जहां एक नहीं, दो नहीं, २४ में से २० तीर्थंकर मोक्ष गये । अनन्त चरित्रात्माओं ने मोक्ष प्राप्त किया था ।

जिस स्थान से प्रभु मोक्ष गये । पहले यहां उनके मन्दिर थे जो शिखर वेध थे, परन्तु अकबर के काल में बिजली गिरने से सारे मन्दिर समाप्त हो गये, तो समाज ने उन स्थानों पर चरन चिन्हों की स्थापना की, जिनका समय-समय पर जीर्णोद्धार होता रहा है, जिनका पहले वर्णन किया जा चुका है ।

सीतानाले के बाद हमें उन दोनों को सिपाहियों को छोड़ना था । वहां से हम और वह छोटा सा नौकर जो काफी होशियार था और रास्ते का जानकार था, हमारे साथ था । हमें अब सीधी और कठिन चढ़ाई शुरु करनी थी जो तीन किलोमीटर से अधिक थी । अब लाठी ही हमारा सहारा

थी । इस लाठी की महानता हमें अब प्रतीत हो रही थी । अब सांस फूल रहा था, हम काफी चढ़ाई पर थे । नीचे देखने से हमें यह नहीं लगता था कि हम नीचे का रास्ता पैदल चल कर आये हैं । रास्ते में रुकना भी भयंकर प्रतीत होता था, चढ़ने का उत्साह बना हुआ था ।

करीब दस बजे हम पहली टोंक पर पहुंचे । यह हमारे लिये मांगलिक गणधर गौतम स्वामी की टोंक थी । उसे वन्दना कर ऊपर लिखित टोंक आने लगीं हर टोंक का अपना शिखर है । परिक्रमा के लिये पक्का मार्ग है । यह चरण अधिकांश भूरे पत्थर पर उत्कीर्ण हैं । सभी वेदियां संगमरमर की बनी हुई हैं । यात्रा शुरु हो चुकी थी, हर तीर्थंकर की टोंक का शास्त्रों में अलग नाम है । उस टोंक की स्तुति व परिक्रमा करके चावल चढ़ाये जाते हैं । इसी परम्परा का निर्वाह भी हम कर रहे थे । पर्वत की यात्रा करते हमें दो घण्टे बीत चुके थे । पास ही एक ऊंचे पहाड़ पर एक टोंक देखी, इसकी चढ़ाई एक किलोमीटर है, इतना ही उतराना पड़ता है । ज्यादा यात्री इस टोंक को छोड़ देते हैं, पर मेरे मन में ऐसा करने का विचार नहीं था। हम दोनों इस टोंक पर चढ़े। चन्द्रप्रभु की टोंक की पहाड़ी का नाम भी चन्द्रप्रभु पहाड़ी है, हम वापिस आये तो आसपास तीर्थंकरों की टोंकों के दर्शन करते रहे । दोपहर के २.३० बजने को थे । हमारी आधी यात्रा सम्पन्न हो चुकी थी । हम यात्रा के अगले महत्वपूर्ण पड़ाव की ओर आगे बढ़े ।

जल मन्दिर की यात्रा :

हम जलमंदिर पहुंच चुके थे । हम जलमंदिर के बारे में क्या वर्णन करें ? यह पर्वत के मुकुट का नगीना है । यहां शीतकुंड का झरना मन्दिर जी शोभा में चार चांद लगाता

है । इस मन्दिर जी में पहुंचकर यात्री स्नान करते हैं । हमने यहां स्नान किया, पुनः पूजा के वस्त्र धारण प्रभु पार्श्वनाथ के मंदिर आये । यह स्थान परम शांति प्रदान करने वाला है । यहां पहुंचकर लगता है कि हमने जीवन का महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरा कर लिया है, यह पर्वत स्वर्ग का मनोरम दृश्य प्रतीत होता है । मन्दिर जी में श्री सांवलिया पार्श्वनाथ अपनी आभा के साथ विराजमान हैं । आसपास शासनदेव, शासनदेवीयों की प्रतिमाएं हैं, यह मन्दिर पूर्णरूप से संगमरमर का वना हुआ है, मन्दिर भव्य है, मनोरम है । यात्रियों को आकर्षित करता है । बड़ी बात यह है कि सारे पर्वत पर यहीं एक मन्दिर है । बाकी तो टोंके हैं ।

हमने जलकुंड के पवित्र कुंड को देख, यहां आसपास के वन प्रकृति सम्पदा से भरे पड़े हैं । यहां औषधियों के भण्डार है । यह औषधियां स्थानीय आदिवासी लोग धर्मशाला में वेचते हैं । हर विमारी की औषधि है । यहां की औषधियां भी चमत्कारी हैं । स्नान के वाद हमने पुजारी की सहायता से पूजा सम्पन्न की । फिर हमें इसी पुजारी ने खाना वनाकर खिलाया । यहां के पुजारी भक्तों का विशेष सम्मान करते है। । प्रभु पार्श्वनाथ की साक्षी से मैंने अपने धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन को शाल ओढ़ाया। यह उसकी समर्पित आत्मा को महत्वपूर्ण भेंट थी ।

फिर मन्दिर जी में हम कुछ समय रुके । रुकने के वाद हमने पुनः यात्रा प्रारम्भ की, पर अभी दो टोंक ही सम्पूर्ण की थीं कि आसमान पर घनघोर वादल छा गयें । इन वादलों में मधुवन के मन्दिरों का समूह, अपनी अनुपम छटा विखेर रहा था । अभी कुछ ही दूर चले होंगे कि वर्षा शुरु होने लगी । पहाड़ों में वर्षा इसी तरह अचानक ही होती है, पर ज्यादा ऊंचाई के कारण यह वर्षा तूफान के साथ आई ।

हम आगे बढ़ रहे थे, वर्षा पड़ रही थी । कुछ ही समय के वाद हमें इस पर्वत का सवसे ऊंचा शिखर दिखाई दिया । यह शिखर प्रभु पार्श्वनाथ की टोक थी । यह अन्तिम शिखर था ।

वर्षा से हम पूर्ण रूप से भीग चुके थे, हमने प्रभु पार्श्वनाथ की टोंक में वैठकर आराम लिया । हमें टोंक से पहुंचने से पहले एक खाली डोली वाला मिला, जिसने हमें डोली में वैठने का आग्रह किया । हमारे द्वारा यही उत्तर था कि इस समेत शिखर जी की यात्रा हमें पैदल ही करनी है । हम किसी के कंधे पर चढ़कर जाना ही नहीं चाहते । यह टोंक वहुत भव्य है । इस पर चढ़ने के लिये पक्की सीढ़ियों का निर्माण किया गया है । इसकी दो मंजिलें हैं, निचली मंजिल प्रभु पार्श्वनाथ की समाधि चरण है, हमने वहां पूजा की, यहां भी पुजारी विधि से पूजा करा देता है । यहां हमें वैठे-वैठे ४ वज गये । वर्षा थमने का नाम नहीं ले रही थी । इधर गर्मी के दिन वड़े होते हैं, इस तरीके से हमें दिन वड़ा नजर आ रहा था । यात्रा में समय का कोई ध्यान न रहा । हम वर्षा रुकने का इंतजार कर रहे थे ।

चमत्कार :

वर्षा रुकने पर हम चले जव हम पर्वत से नीचे उतर रहे थे तो एक भाई ने शिखर पर से पूछा, "आप यात्री हो ?" मैंने कहा, "हां हम यात्री हैं ।" उसने कहा "नीचे से वायरलस आया है, आप जल्दी नीचे पहुंचो, आप को लेकर सारी धर्मशाला में चिन्ता व्याप्त है ।" फिर उसने हमसे देरी का कारण पूछा । मैंने कहा, "भैयूया ! क्या करें, भारी वर्षा के कारण हम पार्श्वनाथ की टोंक में रुक गये थे । जव वर्षा थमी तो हम नीचे उतर रहे थे ।" उस भाई ने कहा, "तुम

जल्दी प्रस्थान करो, यह पर्वत है, यहां जल्द अंधेरा हो जाता है ।''

हमने उसकी बात की ओर ध्यान दिया, उसकी बात सही थी । ज्यों-ज्यों हम नीचे उतर रहे थे, उतना भयंकर अंधेरा बढ़ रहा था, जंगल की शून्यता का अनुभव होने लगा, वर्षा के कारण कुछ फिसलन थी । पांवों कहीं रखते, जाता कहीं था । पांच-छः वार मेरा धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन फिसला, पर मैंने मौके पर उसे संभाला । फिर अंधेरा छा गया, हमें एक दूसरे को पहचानना मुश्किल हो गया । इस भयंकर जंगल में टॉर्च वाला लड़का हमें रास्ता दिखा रहा था । भयंकर जंगल में हम फंस चुके थे । हमारा आवाज का रिश्ता रह गया । इतना भयंकर अंधकार था कि इधर नीचे धर्मशाला वालों को हमारी कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई तो उन्होंने ६ व्यक्तियों को तीन गैस देकर रवाना किया । इस सघन जंगल में भगवान पार्श्वनाथ की जय ही हमारे काम आई । जब हम थक जाते तो साथ वाला लड़का हमें जय-जयकार करने को कहता । हम अभी सीतानाले की ओर पहुंचे भी नहीं थे कि ६ व्यक्तियों का दल भगवान पार्श्वनाथ की जय-जय करते हुए हमें मिल गये । प्रभु पार्श्वनाथ ने अपने भक्तों की सहायता के लिये यह चमत्कार किया । उन व्यक्तियों ने पहले हमारी कुशलता पूछी, फिर आगे बढ़कर रास्ता दिखाने लगे । सारा जंगल इस प्रकाश से जगमगा उठा । अब हमें धर्मशाला पहुंचाने का जिम्मा उन लोगों का था । उनके साथ तेवरे हमारे साथ चले सिपाही भी थे । वह अपने तीरों से सुसज्जित थे । यह अलौकिक काफिला धीरे-धीरे सीतानाले के पास पहुंचा । यहां पक्की सड़क थी, जहां कभी डाक बंगला बना था, परन्तु अब यहां ठहरने की इजाजत नहीं । सड़क भी भारत सरकार ने

बनानी शुरु की थी, जिसकी इजाजत आनंद जी कल्याण जी पेढ़ी ने नहीं दी । समाज की बदकिस्मती है कि यहां सौ साल से श्वेताम्बर व दिगम्बर कानूनी अदालती लड़ाई लड़ते आ रहे हैं । जिसका समाज को काफी नुक्सान पहुंचा है । समाज का पैसा पानी की तरह बहा है ।

भयंकर फिसलन व मिट्टी गिरने के कारण हम धीरे-धीरे चल रहे थे । हम रात्रि में ८ बजे अपनी यात्रा सम्पन्न कर सके । फिर नीचे आकर पार्श्वनाथ पर्वत को प्रणाम किया । यह सिद्धभूमि व मोक्ष भूमि है, इसलिये हर जैन के लिये हर क्षण, हर पल इसको वन्दन करना जरूरी है । हम नीचे उतर चुके थे, अब हमारे शरीर में थकावट बहुत हो चुकी थी । २७ कि.मी. की पहाड़ी यात्रा भयंकर कठिनाईयों से भरी हुई थी, पर प्रभु पार्श्वनाथ व भोमिया जी की कृपा भक्तों पर ऐसी है कि संकट कभी आता नहीं । हमने एक हलवाई से प्रशाद खरीदा, भोमिया जी को धन्यवाद रूप में अर्पण किया । इतनी थकावट के बावजूद हमने साथ खुले मन्दिरों के दर्शन किये. फिर धर्मशाला में पहुंचे । हमारे मुनीम जी ने हमसे कहा, "श्रावक जी ! आपको यात्रा में काफी कठिनाई आई होगी, हमें चिन्ता सताती रही ।" मैंने कहा, "समेदशिखर तो मोक्ष भूमि है, इसकी गोद में कोई कष्ट उपद्रव नहीं आता । बाकी देव, गुरु व धर्म की कृपा से हमें कोई कष्ट नहीं आया ।"

पुनः हमने होटल में खाना बनवाया क्योंकि भोजनशाला बन्द हो चुकी थी । सूर्य उदय के पश्चात् किसी भी जैन तीर्थ पर भोजन की व्यवस्था नहीं है । ऐसा जैन धर्म का सख्त नियम है जिसे सारे मुनिराज श्रेष्ठ, श्रावक वर्ग जीवन भर पालन करता है । महाव्रतों के बाद छठा रात्रि भोजन परित्याग व्रत है, पर हम अभी श्रावक के व्रतों के धारक